अध्याय 1

रानी वशती को पद से हटाना

एस्तेर का पहला अध्याय उन सभी बातों के लिये मंच तैयार करता है जो निम्नलिखित हैं। फ़ारस के राजा ने अपने विशाल साम्राज्य भर के रईसों के लिये एक बड़ा भोज रखा। फिर उसने शूशन नामक राजगढ़ में उन लोगों के लिये एक और बड़ा भोज रखा। उसने रानी वशती को इस सभा में उपस्थित होने और उसकी सुन्दरता प्रगट करने की आज्ञा दी। जब उसने आने से इनकार कर दिया, तो उसके भेद जाननेवाले पण्डितों ने उसे उसको रानी के पद से हटाने की सलाह दी। उसने उनकी सलाह का पालन किया और रानी को अपनी उपस्थिति से निकाल दिया। अगला अध्याय बताता है कि यहूदी लड़की एस्तेर ने रानी के रूप में वशती का स्थान कैसे प्राप्त किया।

राजा का प्रधानों के साथ छः महीने तक बड़ा भोज (1:1-4)

**[1]क्षयर्ष नामक राजा के दिनों में ये बातें हुईं: यह वही क्षयर्ष है, जो एक सौ सत्ताईस प्रान्तों पर, अर्थात् हिन्दुस्तान से लेकर कूश देश तक राज्य करता था।
[2]उन्हीं दिनों में जब क्षयर्ष राजा अपनी उस राजगद्दी पर विराजमान था जो शूशन नामक राजगढ़ में थी। [3]वहाँ उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों को भोज दिया। फ़ारस और मादै के सेनापति और प्रान्त-प्रान्त के प्रधान और हाकिम उसके सम्मुख आ गए। [4]वह उन्हें बहुत दिन वरन् एक सौ अस्सी दिन तक अपने राजसी वैभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा।**

कहानी एक अनुच्छेद से शुरू होती है जो उस राजा की पहचान करता है जिसके चारों ओर षड्यंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

आयतें 1, 2. ये बातें हुईं इब्रानी पाठ के पहले शब्द וַיְהִי *(वायेही)* का अनुवाद है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "और ऐसा हुआ।" इस इब्रानी शब्द का अनुवाद "यही बातें हुईं," (NIV) और "अब ऐसा हुआ" (KJV) के रूप में भी किया गया है। कुछ अनुवाद में इसे पूरी तरह से छोड़ दिया गया है। इस शब्द का उपयोग अक्सर पुराने नियम में किसी पुस्तक की शुरुआत करने के लिये किया जाता है। केरी ए. मूरे के अनुसार, शब्द को "एक परम्परागत खुले सूत्र के रूप में समझा जाता है, जो पाठक के लिये मंच को उसी तरह तैयार करता है, जिस तरह से वाक्यांश 'एक समय की

बात है’ हमारे बच्चों की कहानियों में होता है।”[1]

फारस का यह राजा **क्षयर्ष** था, जो अपने यूनानी नाम “क्षयर्ष” से अधिक जाना जाता है। यह वही है जिसके बारे में एज्रा 4:6 में बताया गया है। क्योंकि एस्तेर की पुस्तक के लेखक ने इस बात को बताया कि वह किस क्षयर्ष के बारे में कह रहा था, इसलिये यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह इसी नाम से अन्य राजाओं को भी जानता था।

ऐतिहासिक और भाषाई साक्ष्यों के आधार पर, इस राजा की पहचान फारस के चौथे सम्राट (486-465 ई.पू.) के रूप में क्षयर्ष I के रूप में की गई है। “क्षयर्ष” फारसी शीर्षक खशायर्ष का इब्रानी अनुवाद है, जिसका अर्थ है “पराक्रमी पुरुष” और इस शीर्षक का उपयोग राजा ने अपने स्मारक शिलालेखों पर करवाया था। क्षयर्ष का प्रभुत्व “हिन्दुस्तान से मिस्र की सीमाओं तक ... और इयोनिया के तट से अरब के रेगिस्तान तक” फैला हुआ था।[2] यह **हिन्दुस्तान से इथियोपिया** (या “कुश”; NIV) के क्षयर्ष के शासनकाल की पुष्टि करता है। क्षयर्ष की राजधानियों में से एक शूशन थी, जबकि आयत 2 के अनुसार, फारस में क्षयर्ष की **राजगद्दी शूशन नामक राजगढ़ में थी**। अन्य तीन राजधानियाँ पर्सेपोलिस, एकबटाना और बेबीलोन थीं।

फारसी साम्राज्य को बीस से तीस अधिकृत शासित क्षेत्रों में विभाजित किया गया था।[3] यहाँ और बाद में पुस्तक में वर्णित **एक सौ सत्ताईस प्रान्त** (8:9; 9:30) छोटे भौगोलिक और जातीय रूप में पहचाने जाते थे। उदाहरण के लिये, यहूदा बड़े अधिकृत शासित क्षेत्रों के भीतर एक प्रान्त था, जिसे “महानद के पार” के नाम से जाना जाता था।[4]

आयतें 3, 4. पाठ के अनुसार, क्षयर्ष ने **फ़ारस और मादै** से अपनी सीमा के प्रधानों को **भोज** दिया। “फ़ारस और मादै” दानिय्येल की पुस्तक के परिचित क्रम को उलट देता है (दानिय्येल 5:28; 6:8, 12, 15; 8:20)। यह माना जाता है कि दोनों राष्ट्र उनके नस्लीय आधार से जुड़े हुए थे। मादियों ने 550 ई.पू. तक शासन किया, जब साइरस और फारसी लोग राज करने लगे।[5]

उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में “भोज” दिया। क्योंकि क्षयर्ष ने लगभग 486 से 465 ई.पू. तक शासन किया, इस अध्याय की घटनाएँ लगभग 483 ई.पू. में घटी थी। एस्तेर की पुस्तक भोज के विस्तार का कारण नहीं बताती है। इस अवसर का उद्देश्य यूनानियों के विरुद्ध क्षयर्ष के आगामी अभियान की योजना बनाना हो सकता है।[6] उसके पिता दारियस प्रथम ने यूनान को जीतने का प्रयास किया था, परन्तु 490 ई.पू. में मैराथन में हार गया। जहाँ दारियस सफल होने की सोच रहा था असफल हो गया, क्षयर्ष ने पूरे साम्राज्य भर के प्रधानों को अतिथि सत्कार करने में पूरा आधा वर्ष (**एक सौ अस्सी दिन**) लगा दिया। वह लगभग निश्चित रूप से उन्हें बारी बारी से शूशन में ले आया, जो आशा के साथ यूनान पर जय प्राप्त करने के लिये उनका समर्थन चाहता था।

इस पाठ से मालूम होता है कि राजा का उद्देश्य अपने **राजसी वैभव का धन** और **अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ** से अपने अतिथियों को प्रभावित करने के

लिये दिखाना था। यह न केवल प्रसिद्धि और प्रशंसा के लिये उसकी व्यक्तिगत लालसा को पूरा करता है, बल्कि किसी भी जो असाहसी थे को अपने अतिथियों के बीच साहस प्रदान कर सकता है और उन्हें यूनान के अपने आक्रमण में फारसियों के साथ शामिल होने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। इसके अलावा, यह ऐसे किसी भी व्यक्ति को प्रभावित कर सकता है जो इस तरह के शक्तिशाली साम्राज्य को पार करने में निहित खतरों से जुड़ने की इच्छा नहीं रखते थे।

राजा का शूशन नामक राजगढ़ में सात दिन तक भोज देना (1:5-9)

[5]इन दिनों के बीतने पर राजा ने क्या छोटे क्या बड़े उन सभों को भी जो शूशन नामक राजगढ़ में इकट्ठा हुए थे, राजभवन की बारी के आँगन में सात दिन तक भोज दिया। [6]वहाँ के परदे श्वेत और नीले सूत के थे, और सन और बैंजनी रंग की डोरियों से चाँदी के छल्लों में, संगमरमर के खम्भों से लगे हुए थे; और वहाँ की चौकियाँ सोने-चाँदी की थीं; और लाल और श्वेत और पीले और काले संगमरमर के बने हुए फ़र्श पर धरी हुई थीं। [7]उस भोज में राजा के योग्य दाखमधु भिन्न भिन्न रूप के सोने के पात्रों में डालकर राजा की उदारता से बहुतायत के साथ पिलाया जाता था। [8]पीना तो नियम के अनुसार होता था, किसी को विवश करके नहीं पिलाया जाता था; क्योंकि राजा ने अपने भवन के सब भण्डारियों को आज्ञा दी थी, कि जो अतिथि जैसा चाहे उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना। [9]रानी वशती ने भी राजा क्षयर्ष के भवन में स्त्रियों को भोज दिया।

राजा ने सात दिनों का भोज देकर अतिथि सत्कार करके अपने छः महीने के उत्सव का समापन किया।

आयत 5. स्पष्ट है, **क्या छोटे क्या बड़े जो शूशन नामक राजगढ़ में - भोज** में शामिल हुए, जो **राजभवन की बारी के आँगन में** आयोजित किया गया था। यह घटना पिछली घटनाओं से भिन्न है इस तरह कि कौन आ सकता था और हर व्यक्ति कितना पी सकता था। भोज एक सप्ताह तक चलता रहा।

आयतें 6-8. लेखक ने इस भोज की तैयारी का विस्तार से वर्णन किया है। उसने दीवारों की सजावट और बगीचे (**झूलता हुआ**) के **संगमर्मर के खम्भों**, नक्काशीदार लकड़ी के फर्नीचर जिस पर बैठकर लोगों ने भोजन किया, **राजभवन की बारी के आँगन** के **संगमर्मर** के बने हुए फ़र्श और महंगे **सोने के पात्रों** जिनमें राजा के अतिथि अपना दाखमधु पीते थे का चित्रण किया। इन विवरणों का उद्देश्य फारसी साम्राज्य की भव्यता को दर्शाना और पाठक को इस तथ्य के साथ प्रभावित करना था कि, उसका साम्राज्य कितना बड़ा था, और अभी भी उसपर परमेश्वर का नियंत्रण था।

ये विवरण, दूसरों के साथ (जैसे कि इस अध्याय के बाकी हिस्सों में पाए गए नाम), कहानी की प्रामाणिकता का समर्थन करते हैं। इनकी विस्तृत जानकारी (या

ध्यान) कौन दे सकता था? पुस्तक में दिए गए विवरणों से पता चलता है कि कहानी का आविष्कार पुरीम के पर्व को समझाने के लिये नहीं किया गया था। (जो लोग पुस्तक को काल्पनिक कहानी के रूप में देखते हैं, वे इन नामों और अन्य विवरणों को समझते हैं, क्योंकि लेखक ने कहानी को प्रशंसनीय बनाने के लिये इसकी रचना नहीं की है, परन्तु इस तरह के विचार के लिये कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।)

राजा के एक विशेष आदेश से, उपस्थित हर व्यक्ति जितना चाहे उतना अधिक या कम पी सकता था। **दाखमधु राजा की उदारता से बहुतायत के** साथ या सचमुच उसके "हाथ" द्वारा प्रदान की गई थी, जो यह बताती है कि यह अच्छा और प्रचुर मात्रा में था। फारसी ऐसे अवसरों पर अत्यधिक दाखमधु पीने के लिये जाने जाते थे।[7] जोसेफस ने कहा कि अतिथियों को लगातार दाखमधु पिलाने की प्रथा थी; इस प्रकार वे सामान्य रूप से पिलाने के लिये विवश होते थे।[8] ऐसा हो सकता है कि राजा को हर बार पीने के लिये अतिथियों की आवश्यकता होती थी। जबकि, इस अवसर पर, राजा ने सामान्य विधि को तोड़ दिया - चाहे वह जो कुछ भी था - और उन लोगों को निर्देश दिया जो पिलाने का काम कर रहे थे, जो हर किसी को जितना चाहे उतना अधिक या कम पीने के लिये देते थे ("जितना जो चाहता था"; NIV)। शब्द **नियम** का उपयोग यहाँ पर फ़ारसियों और मादियों के अपरिवर्तनीय नियम के लिये नहीं किया गया है; बल्कि, इस भोज के बारे में राजा की आज्ञा के लिये उपयोग किया गया है। क्योंकि राजा सर्वश्रेष्ठ था, इसलिये उसकी विधि को निरस्त करना नियम का प्रभाव था।[9]

आयत 9. उसी समय, **रानी वशती** ने भी अपने **भोज** में स्त्रियों का मनोरंजन किया। पुरुषों और स्त्रियों को हमेशा फारसी भोज (5:4),[10] में अलग नहीं किया जाता था, परन्तु इस अवसर पर रानी ने अपने स्वयं के उत्सव से अतिथि सत्कार की।

राजा का अपनी रानी से अनुचित आग्रह और उसका इनकार (1:10-12)

[10]सातवें दिन, जब राजा का मन दाखमधु में मग्न था, तब उसने महूमान, बिजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस नामक सातों खोजों को जो क्षयर्ष राजा के सम्मुख सेवा टहल किया करते थे, आज्ञा दी, [11]कि रानी वशती को राजमुकुट धारण किए हुए राजा के सम्मुख ले आओ; जिससे कि देश देश के लोगों और हाकिमों पर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए; क्योंकि वह देखने में सुन्दर थी। [12]खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी वशती ने आने से इनकार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा।

राजा क्षयर्ष ने अपनी रानी के पास आदेश भेजा की वह आकर उसकी सुन्दरता प्रगट करे, परन्तु उसने आने से इनकार कर दिया।

आयतें 10-12. राजा अपने अतिथियों को यह समझाना चाहता था कि वह कितना धनी और शक्तिशाली था। अपनी महानता के साथ भोज में उन लोगों को प्रभावित करने के लिये, उसने अपनी **सुन्दर** रानी को दिखाने का निर्णय किया; तो उसने **सातों खोजों ... को आज्ञा दी** कि रानी वशती को उसके सम्मुख ले आएँ, ताकि भोज में आए और पुरुषों पर **उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए** (1:11)। परन्तु, उसने उसे वापस संदेश भेजते हुए **आने से** इनकार किया। अपनी पत्नी के इनकार करने पर राजा **बहुत क्रोधित हुआ** और **बड़े क्रोध से जलने लगा** (1:12)। उसकी प्रतिक्रिया को समझा जा सकता है: शक्तिशाली पुरुषों की भीड़ के सामने जिन्हें वह अपनी महिमा से प्रभावित करने का प्रयास कर रहा था, संसार को नियंत्रित करने वाले शासक अपनी पत्नी को नियंत्रित नहीं कर सकता था।

कहानी स्पष्ट है, परन्तु बहुत कुछ के बारे में नहीं कहा गया है। कम से कम दो प्रश्न अनुत्तरित हैं:

पहला प्रश्न यह है कि "क्या राजा को वशती को बुला भेजना या उसे दाखमधु में मग्न लोगों की इस भीड़ में स्वयं को दिखाने के लिये आग्रह करना चाहिए?" इस चित्रण में लोगों पर नैतिक निर्णय पारित करने का लेखक का उद्देश्य नहीं था। फिर भी, उसका कथन कि राजा ने वशती को बुला भेजा था **जब** [उसका] **मन दाखमधु में मग्न था** (1:10) केवल कहने का एक तरीका है, "जब वह दाखमधु में मग्न था।" लेखक का अर्थ यह हो सकता है कि जो लोग बहुत अधिक पीते हैं, वे उन बातों को करने की सम्भावना रखते हैं जिससे उन्हें बाद में पछतावा होता है।

दूसरा प्रश्न जो उठता है वह यह है कि "क्या राजा के कहने पर स्वयं को प्रदर्शित करने से इनकार करने के लिये रानी की प्रशंसा की जानी चाहिए या निन्दा की जानी चाहिए?" कोई नहीं जानता कि वशती ने अपने पति की आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया।[11] जिस रीति से क्षयर्ष की उसके सख्त रवैये के लिये निन्दा की गई है, उसके अनुचित अनुरोध को अस्वीकार करने के लिये वशती की प्रशंसा की गई है।[12] अक्सर उसके इनकार को उसकी विनम्रता का प्रतीक ठहराया गया है। कुछ यहूदी गुरुओं ने सोचा कि राजा ने वशती को अपना **राजमुकुट** पहनने की आज्ञा दी थी - और कुछ नहीं![13] कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि घूंघट के बिना भीड़ के सामने आने से भी रानी की भावना को ठेस पहुँच सकती थी। एक और दृष्टिकोण यह है कि वह गर्भवती थी और उस स्थिति में सार्वजनिक रूप से प्रगट नहीं होना चाहती थी।[14] एक अन्तिम विचार यह है कि इस तरह के दिखावे सामान्यतः उपपत्नियों द्वारा किए जाते थे, और रानी को लगता था कि यह माँग उसके पद और गरिमा के नीचे है।[15] तर्क, जहाँ तक राजा और उसके सलाहकारों का विचार था, उसके इनकार में उसके पति, एक विशाल साम्राज्य का शासक के प्रति घोर अनाज्ञाकारिता थी!

शायद आज के पाठकों को यह उस परिपेक्ष्य में जो हुआ को समझने में सहायता मिलेगी यदि हम स्मरण रखें कि रानी भी भोज में मेजबान की भूमिका निभा रही थीं। जब हम राजा के सात खोजों को व्याकुल होते और उसे राजा के भोज में उनके साथ आने की आज्ञा देते हुए देखते हैं, तो हम वशती को अपने स्वयं के पर्व पर

समारोहों की मालकिन के रूप में सेवा करने की कल्पना कर सकते हैं। वशती ने बहुत मना किया होगा क्योंकि उसने राजा के आदेश को बुरा समय और दबाव का आकलन लगाया था। तब शायद उसे अपनी विनम्रता की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं थी।[16]

राजा द्वारा रानी का त्याग (1:13-22)

योजना की आवश्यकता (1:13-15)

[13]तब राजा ने समय समय का भेद जाननेवाले पण्डितों से पूछा - राजा तो नीति और न्याय के सब ज्ञानियों से ऐसा ही किया करता था। [14]उसके पास कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान नामक फ़ारस और मादै के सात प्रधान थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य मुख्य पदों पर नियुक्त किए गए थे - [15]राजा ने पूछा, "रानी वशती ने राजा क्षयर्ष की, खोजों द्वारा दिलाई हुई आज्ञा का उल्लंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साथ क्या किया जाए?"

क्रोधित हुए राजा ने वशती की आज्ञा उल्लंघन के बारे में निर्णय लेने के लिये अपने सब ज्ञानियों से सलाह ली।

आयतें 13, 14. **राजा** के पास **सात प्रधान** थे जिन्होंने मिलकर उसके निकटतम सलाहकारों की एक मण्डली बनाई थी (देखें एज्रा 7:14)। वे यहाँ **समय समय का भेद जाननेवाले पण्डितों** के रूप में जाने जाते थे और **नीति और न्याय के ज्ञानी** समझे जाते थे। ये लोग **राजा का दर्शन करते** थे (शाब्दिक रूप से, वे "राजा का चेहरा देखा करते थे") और **उसके पास** होते थे।

आयत 15. जैसा कि पूरी पुस्तक में स्पष्ट है, इस राजा ने अक्सर दूसरों से सलाह माँगी और उसका पालन किया। उसने इन सात सलाहकारों से पूछा कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन किए जाने पर **रानी वशती के साथ क्या किया** जाना चाहिए।

युक्ति को पूरा किया गया (1:16-20)

[16]तब ममूकान ने राजा और हाकिमों की उपस्थिति में उत्तर दिया, "रानी वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं। [17]क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों में होगी और जब यह कहा जाएगा, 'राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को अपने सामने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह न आई,' तब वे भी अपने अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी। [18]आज के दिन फ़ारसी और मादी हाकिमों की स्त्रियाँ जिन्होंने रानी की यह बात सुनी है, वे भी

राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी; इस प्रकार बहुत ही घृणा और क्रोध उत्पन्न होगा। [19]यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और फारसियों और मादियों के व्यवस्था में लिखी भी जाए, जिससे कभी बदल न सके, कि रानी वशती राजा क्षयर्ष के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे दे जो उस से अच्छी हो। [20]अत: जब राजा की यह आज्ञा उसके सारे राज्य में सुनाई जाएगी, तब सब पत्नियाँ अपने-अपने पति का, चाहे बड़ा हो या छोटा, आदरमान करती रहेंगी।"

आयत 16. **ममूकान**, 1:14 में दिए गए **हाकिमों** में से एक, ने यह सलाह देते हुए उत्तर दिया कि **राजा रानी वशती** को हटा दे। उसने कहा उसने अपने व्यवहार से न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो उसके **सब प्रान्तों में रहते हैं** से **अनुचित काम किया है**।

आयतें 17, 18. उसने यह चिन्ता व्यक्त की कि राजा के सम्मुख **रानी के इस काम की चर्चा होगी** और राज्य में **सब** पत्नियाँ आज्ञा का उल्लंघन करेंगी। उन्होंने कल्पना की कि वे **अपने अपने पति को तुच्छ जानने** लगेंगी या बहुत ही घृणा करेंगी और वशती के व्यवहार का उपयोग अनुचित रीति से और उदाहरण के रूप में करेंगी। इस तरह के अनादर से उनके पति **क्रोध** में प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

आयत 19. इसलिये, ममूकान ने कहा, **राजा** को यह कहते हुए एक निर्णय जारी करना चाहिए कि **वशती** को फिर से राजा **के सम्मुख आने** की अनुमति नहीं दी जाएगी; उसका **पद** किसी दूसरी को दी जाएगी, **जो उस से अच्छी** थी। शब्द "किसी दूसरी" (רְעוּת, *रेयुथ*) का शाब्दिक अर्थ है उसका "साथी" या "पड़ोसी।" यह किसी दूसरी स्त्री को संदर्भित करता है अर्थात् जो रनवास की स्त्री हो।

वशती को निकाले जाने की शर्तों को रेखांकित किया जाना चाहिए: वह फिर से राजा के "सम्मुख" में नहीं आने वाली थी, और उसका पद "किसी दूसरी" को दी जानी थी। इन घोषणाओं में से कोई भी इंगित नहीं करता है कि उसे राजा की पटरानी होने से हटाया जाना था। अधिक सम्भावना यह है, अब वह राजा की मुख्य रानी के पद से, उसकी पहली पत्नी के रूप में अपने पद का आनन्द नहीं उठाने वाली थी, परन्तु वह उसकी पत्नियों के साथ उसके घर में रह सकती थी।

फारसियों और मादियों के **कानून** अन्य **कानूनों** की तरह यह संस्करण कभी भी परिवर्तित या निरस्त नहीं किया जा सकता था। मादियों और फारसियों के कानून में लिखी गई बातें जो बदले नहीं जाते थे के बारे में कही बातें दानिय्येल 6:8, 12, और 15 के अनुरूप है और कहानी के अन्त में पाई जाने वाली घटनाओं के लिये पाठक को तैयार करती हैं (8:8)।

आयत 20. राजा की आज्ञा के परिणामस्वरूप यह हुआ, ममूकान ने कहा, सब पत्नियाँ **अपने-अपने पति का आदरमान** करती रहेंगी। बल्कि उनके जीवन में पुरुषों के लिये उचित स्थान होगा, चाहे वे **बड़े हों** या **छोटे**।[17]

क्या ममूकान के डर उचित थे? निश्चित रूप से, वशती ने राजा की बात मानने से इनकार कर दिया था, क्योंकि यह सार्वजनिक भोज में हुआ था। फारस के रईसों

को शायद यह डर था कि उनकी पत्नियाँ उनके सख्त व्यवहार के विरुद्ध प्रतिक्रिया दिखाएँगी। इक्कीसवीं सदी में रहने वाले किसी व्यक्ति के लिये ममूकान का तर्क वास्तविक लगता है या नहीं, यह समझ में आता है कि उनके सुननेवालों ने उनकी पुरुषत्व के खतरे को गंभीरता से लिया होगा।[18]

ममूकान के प्रस्ताव में व्यक्त पुरुष प्रभुत्व का दृष्टिकोण आधुनिक आदर्शों के साथ-साथ बाइबल के मानकों (विशेषकर जब एक पुरुष और उसकी पत्नी के सम्बन्ध में नए नियम की शिक्षा के साथ तुलना में) का उल्लंघन करता है। इसलिये, व्याख्या की पहली आवश्यकता कहानी को अपने संदर्भ में समझना है। पाँचवीं सदी ईसा पूर्व में फारसी साम्राज्य के मानकों को देखते हुए, ममूकान की सलाह उचित थी।

अन्य लोग ममूकान की सलाह और राजा की स्वीकृति को अलग तरह से देखते हैं। प्राचीन गुरुओं ने कहा कि क्षयर्ष के कार्य में "समझदारी की कमी" थी और इस तरह का एक आदेश जारी करके "उसने स्वयं को हँसी का एक पात्र बना लिया।"[19] ऐसे विचार दो अनुमानों पर आधारित प्रतीत होती हैं: (1) राजा ने अनादर की कल्पना कर व्यर्थ प्रतिक्रिया जताई। व्याख्याकारों के लिये यह हास्यास्पद प्रतीत होता है कि वशती के व्यवहार को राज्य में हर परिवार के लिये लागू करना एक अपरिवर्तनीय कानून की घोषणा करनी चाहिए। यहाँ तक कि वशती की आज्ञा का उल्लंघन का ज्ञान के फैलने का डर कई विद्वानों को मूर्खतापूर्ण नहीं लगता। (2) कथित समस्या का समाधान मूर्खतापूर्ण और अमल करने योग्य नहीं था। राजा एक ऐसे कानून को कैसे लागू कर सकता है जो पतियों और उनकी पत्नियों के बीच निजी सम्बन्धों पर लागू होता है?

घोषणा पत्र जारी किया गया (1:21, 22)

[21]यह बात राजा और हाकिमों को पसन्द आई और राजा ने ममूकान की सम्मति मान ली और अपने राज्य में, [22]अर्थात् प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों में और प्रत्येक जाति की भाषा में चिट्ठियाँ भेजीं, कि सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएँ, और अपनी जाति की भाषा बोला करें।

आयतें 21, 22. 483 ई.पू. में शूशन के पुरुषों के लिये, राजा की कार्रवाई न केवल उचित, बल्कि आवश्यक भी प्रतीत हुई थी। ममूकान की सलाह से क्षयर्ष और उसके **हाकिम** सहमत हुए। इसलिये, राजा के नाम पर एक आदेश जारी किया गया था, और इसे **प्रत्येक प्रान्त के ...** में वितरित किया गया था। **प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों** में और **भाषा** में चिट्ठियाँ भेजीं गई। यह व्यापक वितरण कुशल डाक प्रणाली को दर्शाता है जो फारसी साम्राज्य की विशेषता थी;[20] प्रणाली की दक्षता बाद में फिर से पुस्तक (3:13, 15; 8:10, 14) में वर्णित है। राजा की आज्ञानुसार **सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएँ**। इसके बाद किसी भी पत्नी के लिये उसके पति की आज्ञा का उल्लंघन करना कानून के विरुद्ध होगा क्योंकि वशती ने क्षयर्ष

की आज्ञा का उल्लंघन किया था।

सम्पादन के दूसरे भाग को समझना कठिन है; **अपनी जाति की भाषा बोला करें** का अर्थ स्पष्ट नहीं है। एक संस्करण यहाँ पर पाठ से इस वाक्यांश को छोड़ देता है और इसे फुटनोट में शामिल करता है। इसके अर्थ को समझा जाता है (1) एक पुरुष को अपने घर में अपनी मूल भाषा बोलनी चाहिए, विशेषकर तब यदि उसकी पत्नी विदेशी है, या (2) राजा की आज्ञा को सब समूह के लोगों के मूल भाषा में घोषित किया जा ना चाहिए। LXX के अनुसार, "इस कारण पुरुषों का डर उनके घरों में होना चाहिए।"[21]

अध्याय के अन्त में, पराक्रमी राजा क्षयर्ष कुछ हद तक दयनीय लगता है। मूरे ने "क्षयर्ष को आकर्षक चरित्र, शक्तिशाली राजा, दाखमधु में मग्न रहनेवाला, अपनी रानी से अनादर किया हुआ, और अपने मित्रों के गलत सलाह को माननेवाला बताया। क्षयर्ष को एक अच्छी संगिनी की आवश्यकता थी।[22] इस आवश्यकता की पूर्ति अगले अध्याय में की जाएगी।

अनुप्रयोग

क्या वशती को मसीही स्त्रियों का एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए? (अध्याय 1)

वशती को आज मसीहियों के लिये एक अच्छा उदाहरण माना जाता है। सी. रूबेन एंडरसन ने लिखा, "रानी वशती एक उदाहरण थी जो अपने सही निर्णय पर दृढ़ रहने का विकल्प चुना फिर चाहे उसका परिणाम जो भी हो सकता था। वह स्वयं के लिये सही और सभी स्त्रियों के लिये एक श्रेय और एक उदाहरण थी।[23]

विशेष रूप से, वशती को मर्यादा के सम्बन्ध में मसीही स्त्रियों के लिये एक नमूने के रूप में प्रयोग किया गया है क्योंकि उसने दाखमधु में मग्न पुरुषों के एक बड़े दर्शक वर्ग के सामने स्वयं का (शायद "अशोभनीय परिधान" में) प्रदर्शन करने से मना कर दिया था। उसे वास्तव में, एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है, जबकि पत्नियों को अपने अपने पतियों की आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता होती है, मसीही स्त्रियों को अपने अपने पतियों की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिये उचित ठहराया जाता है यदि उनके अनुरोध अनुचित या ईश्वर की इच्छा अनुसार न हो।[24]

जबकि इस तरह की व्याख्या के लिये कुछ सकारात्मक बातें कही जा सकती है, हमें ध्यान देना चाहिए कि प्रेरित लेखक ने उसके कार्यों की न तो सहमति व्यक्त किया और न ही अस्वीकृति। उसकी स्थिति आज की मसीही स्त्रियों से बहुत अलग थी। वह एक अलग समय और परिवेश में रहती थी। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह एक फारसी राजा के राज्य में एक रानी, और मुख्य पत्नी (शायद कई में) थी। भले ही यह समझने में सहायता करने के लिये वशती का उपयोग करना उचित था कि मसीही स्त्रियों को कैसे व्यवहार करना है, ऐसा करने से पहले इन अन्तरों के बारे

में हमें दो बार सोचना चाहिए।

क्योंकि बाइबल स्वयं न तो वशती की प्रशंसा करती है और न ही उनकी निन्दा करती है, इसलिये हमारे लिये इस बारे में किसी भी ठोस निष्कर्ष पर पहुँचना अनुचित है कि उसके कार्य सही थे या गलत। इस कथन का उद्देश्य पाठकों को इस बारे में सिखाना नहीं है कि रानियों (या अन्य स्त्रियों) को कैसे कार्य करने चाहिए, परन्तु किसी अवसर पर यहूदियों के बचाए जाने की कहानी से सम्बन्धित होना चाहिए।

वह नया नियम है जो स्त्रियों को सिखाता है कि उन्हें अपने पतियों के साथ कैसे रहना है। यह कहता है कि एक पत्नी को अपने पति के अधीन रहना है (इफि. 5:22-24, 33; 1 पतरस 3:1-6)। उससे उस सभा से आवश्यकता को पूरा करने की अपेक्षा केवल तभी की जाती यदि पति चाहता है कि वह कुछ पाप करे (देखें प्रेरितों 5:29)। हम जानते हैं कि एक मसीही स्त्री को "सुहावने वस्त्र" (1 तीमु. 2:9) पहनना है, या "अपने आप को उचित, सभ्य और सोच विचार के साथ कपड़े पहनकर संवारना है।"

दाखमधु पीने के दुष्परिणाम (अध्याय 1)

अध्याय 1 में क्षयर्ष और वशती का उदाहरण दाखमधु पीने के दुष्परिणामों को चित्रित करने के लिये प्रयोग किया जा सकता है, विशेषकर जब राजा का गुस्सा ठण्डा पड़ गया और वह रानी को निकाले जाने पर पछतावा करता है (2:1)। एन्डरसन ने कहा कि कहानी नशे के दुष्परिणामों को दिखाती है।[25]

1. "नशा सोच समझकर निर्णय लेने की शक्ति को नष्ट कर देता है।" दाखमधु पीनेवालों की भीड़ के आगे रानी को लाना "फारसी अलंकरण और शिष्टाचार के उचित पालन की पूर्ण अवहेलना थी। अपनी सामान्य बुद्धि में [राजा] ने कभी भी इस तरह की नाराजगी के बारे में नहीं सोचा होगा।"

2. "नशा से लज्जा उत्पन्न होती है।" वशती के लिये "राजा की बात मानना एक रानी के लिये सरेआम लज्जा की बात हो जाती।"

3. "नशा करने से पछतावा होता है।" जब राजा क्षयर्ष का गुस्सा ठण्डा हुआ, उसने अपनी रानी के विरुद्ध अपने अपराध के बारे में सोचा (2:1); परन्तु उसका अभिमान और पद उसे उसके नशे की स्थिति में की गई गलती को सही करने की अनुमति नहीं देता। मदिरा के सेवन से अक्सर ऐसे शब्द और कर्म हो जाते हैं जो नुकसान पहुँचाते हैं, जिनकी भरपाई नहीं की जा सकती है।

जीविका का घमण्ड (1:3, 4)

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, "क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है" (1 यूहन्ना 2:16)। एस्तेर 1:3, 4 में, क्षयर्ष "जीविका की अभिलाषा का घमण्ड" का एक सबसे बुरा उदाहरण देता है, "वहाँ

उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों को भोज दिया। ... वह उन्हें बहुत दिन वरन् एक सौ अस्सी दिन तक अपने राजसी वैभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा।"

जबकि पुस्तक के लेखक ने इस प्रदर्शन के लिये राजा की निन्दा नहीं की (और जबकि पाठक को अन्यजाति राजा से ईश्वरीय व्यवहार की उम्मीद नहीं करनी चाहिए), क्षयर्ष की महानता की इच्छा उसकी सम्पत्ति पर आधारित है वही इच्छा जिसके बारे में मसीहियों को 1 यूहन्ना 2:16 में चेतावनी दी गई है (देखें लूका 8:14)।

जब बाइबल ऐसे घमण्ड को संदर्भित करती है, तो इसमें अक्सर नकारात्मक अनुभवों के उदाहरण शामिल होते हैं। अपनी सम्पत्ति का प्रदर्शन करने के बाद, क्षयर्ष निराशा में था क्योंकि वह अपनी पत्नी को नियन्त्रित नहीं कर सकता था। जब हिजकिय्याह ने घमण्ड से बेबीलोन के दूत के सामने अपने राज्य का धन प्रदर्शित किया, तो एक भविष्यद्वक्ता ने उसके राज्य के अन्त की भविष्यद्वाणी की (2 राजा. 20:12-19)। जब राजा उजिय्याह "बलवन्त हो गया, तो उसका मन घमण्ड से इतना भर गया कि उसने अनुचित तरीके से काम किया," जिसके परिणामस्वरूप उसपर कोढ़ प्रगट हुआ (2 इतिहास 26:16-21)। नए नियम में, हमने पढ़ा कि हेरोदेस के व्याख्यान देने के कारण उसकी प्रशंसा की गई, जो "कीड़े पड़ के मर गया" क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा न दी (प्रेरितों 12:20-23)।

इन सभी उदाहरणों से बुद्धिमान व्यक्ति का कहना सिद्ध होता है: "विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है" (नीति. 16:18)। ये आज मसीहियों को चेतावनी देते हैं कि वे "जीविका के अभिलाषापूर्ण घमण्ड" का विरोध करें।

समाप्ति नोट्स

[1]कैरी ए. मूरे, *एस्तेर,* दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 7बी (न्यू यॉर्क: डबलडे & कं., 1971), 3. [2]सिडनी व्हाइट क्रॉफर्ड, "एस्तेर," इन *द न्यू इंटरप्रेटर्'स बाइबल,* एड. लिएंडर ई. केक (नैशविले: एबिंगडन प्रेस, 1999), 3:878. [3]हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 3.89-94; देखें रॉय ई. हेडन, "सैट्रप," इन *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया,* रिवाइज्ड एड., एडिटर जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 4:345. [4]देखें एज्रा 4:10, 11, 16, 17, 20; 5:3, 6; 6:6, 8, 13; 7:25; 08:36; नहेम्याह 2:7, 9; 3:7. [5]जॉयस जी. बाल्डविन, *एस्तेर,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोईस: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1984), 57. [6]देखें हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 7.20. [7]झेनोफोन *साइरोपीडिया* 8.8.9-10; हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 1.133. [8]जोसेफस *एंटीक्विटीज* 11.6.1. [9]बाल्डविन, 58-59. [10]हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 5.18.

[11]विभिन्न सम्भावनाओं के लिये, देखें मार्क मैंगानो, *एस्तेर & डैनियल,* कॉलेज प्रेस NIV कॉमेन्ट्री (जोप्लिन, मिसौरी: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 44-45. [12]फॉय एल. स्मिथ ने उसका वर्णन "एक आदर्श रानी जिसने 'नहीं!' कहा" के रूप में किया (फॉय एल. स्मिथ, *"ब्यूटीफुल स्टार": अ स्टडी ऑफ द बुक ऑफ एस्तेर* [रिवरसाइड, कैलिफोर्निया: फॉय एल. स्मिथ पब्लिकेशन, तिथि अज्ञात], 13)। परन्तु, दूसरे लोग वशती के इन्कार के बारे में इतने सकारात्मक नहीं हैं। माइकल वी. फॉक्स ने कहा कि "कुछ शुरुवाती यहूदी व्याख्याताओं ने सोचा कि एस्तेर के

लेखक ... ने वशती को शत्रुता के साथ देखा, क्योंकि उन्होंने स्वयं ऐसा किया था।" उन्होंने उसके इन्कार को जिम्मेदार ठहराया, उदाहरण के लिये, बड़े उद्देश्य के बदले लज्जा की बात कहा। (माइकल वी. फॉक्स, *करैक्टर एण्ड आइडियोलॉजी इन द बुक ऑफ एस्तेर,* 2ड एड. [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001], 164-65.) कुछ और आधुनिक व्याख्याकारों ने संकेत दिया है कि वे मानते हैं कि वशती का इन्कार "केवल मन की एक भावना" थी (लुईस बेयल्स पैटन, *द बुक ऑफ एस्तेर*, दि इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमेन्ट्री [न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर संस, 1908], 150)। [13]*एस्तेर रब्बाह* 3.13; तल्मूद *मेगिल्लाह* 12बी. [14]जेम्स बर्टन कॉफमैन एण्ड थेलमा बी. कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* (एबिलीन, टेक्सास: एसीयू प्रेस, 1993), 256. अमेस्त्रिस (जो वशती हो सकती है) ने क्षयर्ष I को 483 ई.पू. में जन्म दिया; वह लगभग 465 ई.पू. में साम्राज्य का शासक बन गया। [15]एन्थोनी टॉमासिनो, "एस्तेर," इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड कॉमेन्ट्री,* वॉल्यूम 3, *1 एंड 2 राजा, 1 एण्ड 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 479. [16]क्लेटोन विन्टर्स ने इस घटना को "दाखमधु में मग्न एक पति के निवेदन को अस्वीकार करने वाली पत्नी जिसने बहुत देर तक दाखमधु के कारण बात को टालती रही के रूप में देखा" (क्लेटन विन्टर्स, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा-नहेम्याह-एस्तेर* [एबिलीन, टेक्सास: क्वालिटी पब्लिकेशन, 1991] 163)। [17]यही भाषा 1:5 में दिखाई देती है: "क्या छोटे क्या बड़े।" [18]कई टिप्पणीकारों के अनुसार, विन्टर्स ने ममूकान की सलाह को इस प्रकार चित्रित किया: "जबकि अक्सर टिप्पणीकारों द्वारा आलोचना की जाती है, फिर भी राजा के सलाहकारों का तर्क ज्ञान का एक बड़ा कार्य को दर्शाता है: जो अधिकार और नेतृत्व के पदों पर होते हैं अपने उदाहरणों द्वारा विशेष प्रभाव डालते हैं" (विन्टर्स, 164)। [19]*एस्तेर रब्बाह* 4.12. [20]देखें हेरोडोटस *हिस्ट्रीस* 5.52-53; 8.98.

[21]एफ. बी. ह्यूए, जूनियर, "एस्तेर," इन *दि एक्सपोजिटर बाइबल कॉमेन्ट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 803. से लिया गया है। [22]मूरे, 14. [23]सी. रूबेन एन्डरसन, *द बुक्स ऑफ रूत एंड एस्तेर*, शील्ड बाइबल स्टडी सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 60. [24]उदाहरण के लिये, चार्ल्स आर. स्विंडोल ने लिखा, "रानी वशती पत्नी की अधीनता की सीमा का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। एक पत्नी के लिये अपने पति के अधीन रहने की आज्ञा शास्त्र में स्पष्ट है (देखें इफि. 5:22-24)। परन्तु यह सिद्धता और मर्यादा के बिना नहीं है। स्त्री एक मनुष्य के रूप में अपनी गरिमा नहीं छोड़ती जब वह एक पत्नी बन जाती है। न ही वह अपने सिद्धान्तों को एक असैद्धान्तिक पति के पैरों तले कुचले जाने को तैयार होती है" (चार्ल्स आर. स्विंडॉल एण्ड केन गाइर, *एस्तेर-अ वूमन फॉर सच अ टाइम एस दिस*, बाइबल स्टडी गाइड [फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फॉर लिविंग, 1990], 14)। [25]एन्डरसन, 58-59.